

मुनिद्वय अभिनन्दन ग्रन्थ (फोल्डर नं. ५२००६)

मुख्य टाइटल

मंगलाचरण

प्रकाशकीय

समर्पण

आशीर्वचन

सम्पादकीय

अनुक्रमणिका

प्रथम खण्ड – व्यक्तित्व दर्शन

मालवरत्न उपाध्याय श्री कस्तूरचन्दजी महाराज

करुणा के अमर देवता -----	१
चातुर्मास सूची -----	३०
गुरुदेव श्री के प्रेरक-प्रसंग -----	३१
गुरुदेव श्री के वचनामृत बिन्दु -----	४०
अभिनन्दन पुष्प -----	४४
श्रमण संघ की विरल विभूति -----	४६
भक्ति के चार शब्द -----	४७
ताजा संस्मरण -----	४७
उदार हृदयी के चरणोंमें -----	४८
विलक्षण प्रतिभा के धनी -----	४९
महामालव के महान रत्न -----	५१
हिमालय से भी महान् -----	५२
ज्ञान-गरिमा मंडित -----	५३
कोरे कागज पर ज्ञान के हस्ताक्षर -----	५५
करुणा-कृपा के कुबेर -----	५७
हार्दिक अभिनन्दन -----	५८
विनम्र पुष्पांजलि -----	५९
विनम्र भावांजलि -----	६०
एक शब्द चित्र -----	६२
करुणा सागर के चरणों में -----	६५
मालव की एक विरल विभूति -----	६६
त्याग और करुणा की अक्षय दीपशिखा -----	६८
अभिनन्दन उद्गार -----	७१
कोटि-कोटि हृदयगत प्रणाम -----	७२

अभिनन्दन की पंखुडियाँ -----	७४
सन्त संस्कृति के पावन प्रतीक-----	७५
यशःप्रशस्ति पत्र -----	७६
प्रशस्ति पत्र -----	७८
अभिनन्दन पत्र -----	७९
पुरातन पीढी के आदर्श सन्त -----	८१
वन्दनीय व्यक्तित्व -----	८२

जैनागम तत्त्व विशारद प्रवर्तक श्री हीरालालजी महाराज

जीवन दर्शन -----	८३
नक्षत्रों की भाषा -----	१००
वचन और विचार -----	१०३
संस्मरणों के प्रकाश में -----	११५
आशीर्वचन -----	११९
भावांजलि -----	१२०
हीरा चमकता रहे -----	१२०
मेरी दृष्टि में -----	१२१
मेरे परम सहयोगी -----	१२२
प्रवर्तक श्री हीरालाल जी महाराज -----	१२२
मैंने देखा -----	१२३
स्नेह की जीती जागती प्रतिमा -----	१२३
सिद्धान्तप्रिय सन्त -----	१२५
हार्दिक अभिनन्दन -----	१२६
अभिनन्दन -----	१२६
पथ-प्रदर्शक-प्रवर्तक -----	१२७
मेरे श्रद्धा केन्द्र -----	१२९
जैन जगत की विमल विभूति -----	१३०
अभिनन्दन पत्र -----	१३२
अभिनन्दन पत्र -----	१३३

द्वितीय खण्ड – मुनिद्वय का संयुक्त अभिनन्दन

शुभ कामना सन्देश -----	१३५
श्री संघो द्वारा शुभकामनाएँ -----	१३७
दो पूज्य विभूतियाँ -----	१४५
पयस्विनी भूमि तू धन्य है -----	१४८
दो कविताएँ -----	१५०
अभिनन्दन श्लोकाः -----	१५१

वन्दनांजलि -----	१५२
करुणा के सागर -----	१५२
अभिनन्दनीय प्रयास -----	१५३
अमूल्य निधि -----	१५४
भावांजलि -----	१५४
शतशत प्रणाम -----	१५६
हार्दिक अभिनन्दन -----	१५६
स्मृति के कुछ मधुर क्षण -----	१५७
संत जीवन -----	१५७
मेरे परम तारक -----	१६०
विरल व्यक्तित्व-----	१६१
अभिनन्दनीय समर्पण -----	१६२
भावांजलि -----	१६३
तीन गुण -----	१६५
एक सच्चा हीरा -----	१६६
अभिनन्दन -----	१६७
श्रद्धा के दो पुष्प -----	१६९
मुनि मणिमाला के दो रत्न -----	१७०
पद्य विभाग	
शुभकामनाएँ एवं आशीर्वचन -----	१७१
अभिनन्दन एकादशी -----	१७२
श्रद्धा सुमनांजलि-----	१७३
भारत की सम्पदा -----	१७४
प्र. श्री हीरालालजी महाराज की जीवन रेखाएँ -----	१७५
गुरु कस्तूर गुण पच्चीसी -----	१७६
श्रद्धा सुमन -----	१७७
शासन के सम्राट -----	१८०
जय ज्योतिर्धर की -----	१८१
यशमलयाद्रि सम महके महा -----	१८२
मंगलकामना -----	१८४
शत-शत वन्दन -----	१८५
अभिनन्दन हम करते हैं -----	१८७
कस्तूर गुण ज्ञान -----	१८८
हीरक चालीसा -----	१८९
वन्दन -----	१९३

महिमा महके -----	१९४
श्रमण संघ की थाती है -----	१९५
चरण वन्दना -----	१९६
वन्दना-----	१९७
मुनिद्वय अभिनन्दनम् -----	१९९
दो काव्य -----	१९९
गुरुगुण गान -----	२००
करते श्रद्धा अर्पित -----	२०१
अभिनन्दन शतशतवार -----	२०२
मालवरत्न श्री कस्तूर -----	२०३
गुरुदेव श्री कस्तूरचन्द जी महाराज के प्रति-----	२०४
प्रवर्तक श्री हीरालालजी महाराज के प्रति -----	२०५
समर्पण -----	२०६
तृतीय खण्ड – मालव-ऐतिहासिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक गरिमा	
मालव इतिहास-एक विहंगावलोकन – डॉ. ज्योतिप्रसाद जैन -----	२०७
मालवा-एक भौगोलिक परिवेश – डॉ. बसन्त सिंह-----	२११
प्राचीन भारतीय मूर्तिकला को मालवा की देन – डॉ. भगवतीलाल राजपुरोहित -----	२१९
मालव संस्कृति को जैनधर्म की देन – डॉ. बसन्तीलाल बंग -----	२३२
मालवा में जैनधर्म-ऐतिहासिक विकास – डॉ. तेजसिंह गौड़ -----	२४०
साहित्य एवं कला की पुण्य भूमि-मालवा – श्री रमेश मुनि -----	२५८
मालव-संस्कृति में धार्मिकता के स्वर – प्रो. श्रीचन्द जैन -----	२६१
मालवा के श्वेताम्बर जैन भाषा कवि – श्री अगरचन्दजी नाहटा -----	२६९
भगवान महावीर और मालवपति दशार्णभद्र – मुनि भास्कर -----	२७९
चतुर्थ खण्ड – धर्म, दर्शन एवं संस्कृति	
सम्यक्ज्ञान-एक समीक्षात्मक विश्लेषण – श्री रमेश मुनि -----	२८३
भारतीय तत्त्व चिन्तन में जड़ चेतन का सम्बन्ध – श्री मुनि समदर्शी प्रभाकर -----	२९०
जैन दर्शन में जनतान्त्रिक सामाजिक चेतना के तत्त्व – डॉ. नरेन्द्र भानावत-----	३०१
जैन धर्म के आधार भूत तत्त्व-एक दिग्दर्शन – श्री भगवति मुनि -----	३०८
जैन दर्शन में भावना विषयक चिन्तन – डॉ. शान्ता भानावत -----	३१४
जैन धर्म में आचार – श्री रीषभदास रांका -----	३२२
निक्षेपवाद-एक अन्वीक्षण – श्री रमेश मुनि -----	३२८
जैन दर्शन में नैतिकता की सापेक्षता और निरपेक्षता – डॉ. सागरमल जैन -----	३३२
अन्तरराष्ट्रीय समस्याओं का समाधान-स्याद्वाद – श्री अजित मुनि -----	३४१
अनेकान्त दर्शन – प्राचार्य उ.भा. कोठारी -----	३४४
प्राकृत भाषा के ध्वनि परिवर्तनों की भाषा वैज्ञानिक व्याख्या – डॉ. देवेन्द्रकुमार जैन -----	३४८

आदर्श गृहस्थ बनाम श्रावक धर्म – कुमारी राजल बोथरा -----	३५५
भगवान अरिष्टनेमि की ऐतिहासिकता – श्री देवेन्द्र मुनि -----	३५८
हमारे ज्योतिर्धर आचार्य - श्री प्रतापमलजी महाराज-----	३६३
गुरु-परम्परा की गौरव गाथा – श्री प्रकाश मुनि -----	३७३
पंचम खण्ड – जैन ज्योतिष	
जैन ज्योतिष साहित्य-एक दृष्टि – डॉ. तेजसिंह गौड़ -----	३८१
जैन ज्योतिष एवं ज्योतिषशास्त्री – लक्ष्मीचन्द्र जैन -----	३९२
षष्ठ खण्ड - उपाध्याय श्री कस्तूरचन्द्र जी महाराज के आज्ञानुवर्ती संत सती गण का सचित्र परिचय	